श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारूणम् ।
नवकंज-लोचन कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारूणम् ।।
कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुन्दरम् ।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशल, चन्द दशरथ-नन्दनम् ।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू, उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित खरदूषणम् ।।
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनिंमन रंजनम् ।
मम हृदय कुंज निवास कुरू, कामादि खलदत गंजनम् ।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहिं सो, बर सहज सुन्दर साँवरो ।
करूणानिधान सुजान सीलु, सनेहु जानत रावरो ।।
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय, सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।।
श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भवभय दारूणम् ।
नवकंज-लोचन कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारूणम् ।।

सो

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाई कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ।।

।। सियावर रामचन्द की जय ।।